चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, उत्तर प्रदेश ने रचा इतिहास

कानपुर देहात, विकास खण्ड मैथा का अनूपपुर गांव देश का प्रथम

जैव संवर्धित गांव (**Biofortified Village**) बनाया

मा0 कुलपति डा0 डी0आर0 सिंह, के सांज्ञान में जब यह आया कि **कानपुर देहात** जिला देश में अदृश्य भुखमरी एवं कुपोषण से ग्रसित है तो इस समस्या के स्थायी समाधान हेतु डा0 विजय कुमार यादव, मुख्य धान्यविद्, डा0 अरविन्द कुमार सिंह, अपर निदेशक, प्रसार एवं डा0 अशोक कुमार, कृषि विज्ञान केन्द्र, दलीपनगर कानपुर देहात की एक टीम का गठन किया जिसने अपनी प्राथमिक रिपोर्ट में कई गांव के सर्वेक्षण एवं जिला प्रशासन से विचार विर्मश के बाद गांव अनूपपुर, विकास खण्ड मैथा से कुपोषण की समस्या निदान हेतु चयन किया। इस समस्या के स्थायी निदान हेतु माननीय कुलपति महोदय की अध्यक्षता में गहन विचार विमर्श करने के बाद निर्णय लिया गया था कि कुपोषण एवं अदृश्य भुखमरी की समस्या के स्थायी निदान हेतु कानपुर देहात के अनूपपुर गांव को जैव सवर्धित गांव में परिवर्तित करने की अवधारणा को मूर्तिरूप दिया जाय। जिमसें पोषण सुरक्षा हेतु जैव सवर्धित फसलों के साथ ही पोषण वाटिका एवं पर्यावरण अनुकूल उच्च पौष्टिक मूल्य वाले सहजन, आंवला, नीबू, अमरूद, करौंदा आदि को रोपण हेतु प्रत्येक परिवार को उपलब्ध कराने के साथ गांव में पोषण वाटिका, सामुदायिक पोषण वाटिका एवं कुपोषण एवं अदृश्य भुखमरी से सम्बन्धित जन जागरण के प्रयास किये जाये। इसकी पणिनिति में ***दिनांक 12 अक्टूबर 2020 को डा0 डी0आर0सिंह, कुलपति चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर ने इतिहास रचते हुये अनूपपुर विकास खण्ड मैथा जिला कानपुर देहात गांव को देश के प्रथम जैव संवर्धित गांव घोषित*** किया जिसमें गांव के हर परिवार के सदस्यों ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया। जिसमें प्रत्येक परिवार के एक सदस्य को सहजन, आंवला, नीबू, अमरूद, करौंदा एवं पांच किलो गेहूं की जैव संवर्धित प्रजाति के 1006 को उपलब्ध कराया गया इसके साथ ही गांव में पांच पोषण वाटिका को भी विकसित करने का कार्य किया गया।

जैव संवर्धित गांव अवधारणा (**Biofortified Village Concept**)

अदृश्य भुखमरी के उन्मूलन हेतु देश एवं प्रदेश सरकारों द्वारा संचालित स्वास्थ्य योजनाओं एवं कार्यक्रमों के परिणाम सकारात्मक रहे हैं, लेकिन अभी और अधिक प्रयासों की आवश्यकता है। इसमें पोषक तत्वों को पूरक आहार के रूप में दिये जाने के साथ ही मांसाहारी आधारित उत्पादों को उपलब्ध कराने पर जोर दिया गया है। लेकिन इसे लम्बे समय तक सतत् रूप से नहीं चलाया जा सकता हैं अतः दूसरे स्थायी विकल्पों पर विचार करने पर, आनुवांशिक रूप से समृद्धि पोषक तत्वों वाली प्रजातियों के विकास को प्रमुखता दी जाय। यही एक आर्थिक रूप से ग्राह्यी विकल्प है। इस प्रक्रिया को हम **जैव संवर्धन(Biofortification)** के रूप में जानते है। इसके साथ ही त्वरित रूप से खाद्यन्नों में पोषक तत्व जैसे– जिंक एवं लोहा को बढ़ाने के लिए सस्य तकनीकी को भी अपनाया जा रहा है। गेहूँ एवं चावल अधिकांश भारतीयों का मुख्य भोजन है इन खाद्यान्नों में सामान्यतया मानव शरीर के लिए अति आवश्यक सूक्ष्म पोषक तत्व जैसे– जिंक, लोहा, प्रो विटामिन–ए की कमी से आधी से अधिक जनसंख्या **अदृश्य भुखमरी/कुपोषण** से पीड़ित हैं। **राष्ट्रीय विकास सूचकांक** में बाधित कुपोषण के महत्व की वास्तविकता को दृष्टिगत रखते हुए कुपोषण उन्मूलन कार्यक्रम **"मिलेनियम डेवलपमेन्ट गोल्स"** में प्रमुखता से लिया गया है। इसमें तेजी लाने के लिए अधिक निरंतर प्रयास करने की आवश्यकता है। इस दिशा में चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर

ने 'सेविंग लाइफ, चेंजिंग लाइफ' के नारे के साथ "जैव संवर्धित गांव (बायोफोर्टिफाइड विलेज) अवधारणा की पहल करते हुए देश में पहला प्रयास किया है। **जैव संवर्धित गाँव एक टिकाऊ, लक्ष्य आधारित एवं मूल्य प्रभावी उपाय है।** जिसके द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ अधिकतर जनसंख्या गरीब है, जिनके पास पोषक तत्वों से भरपूर पूरक आहार को बाजार से खरीदने के लिए धन नहीं है। एक रिपोर्ट के अनुसार 63.3 फीसदी ग्रामीण पौष्टिक भोजन नही खरीद सकते क्योकि पौष्टिक भोजन खरीदने के लिये उनके पास आवश्यक धन नही है। यहां तक दूध और सब्जियां खरीदना अत्यधिक कठिन होता है। वहाँ पर जैव संवर्धित गाँवों के विकास द्वारा विभिन्न तरीकों से पोषक तत्वों को उपलब्ध कराकर कुपोषण को आसानी से दूर किया जा सकता है।

कुपोषण को शारिरिक रूप से सक्रिय एवं स्वस्थ जीवन जीने के लिए अति आवश्यक ऊर्जा एवं पोषक तत्वों की अपर्याप्त उपलब्धता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। इसमें अपर्याप्त पोषण एवं अति पोषण दोनों को ही सम्मिलित किया जाता है। कुपोषण से मस्तिष्क के विकास में कमी, विकलांगता, रोग के साथ ही शैक्षिक दक्षता, व्यक्तियों एवं समुदायों की आय अर्जन क्षमता में कमी आदि नकारात्मक प्रभाव पड़ते है। विश्व स्वास्थ्य संगठन का मानना है कि खराब पोषण दुनिया के स्वास्थ्य के लिए सबसे महत्वपूर्ण खतरा है। कुपोषण के तात्कालिक कारण अपर्याप्त मात्रा और गुणवत्ता वाले भोजन का सेवन और बीमारियों के कारण हैं। अदृश्य भुखमरी भी कुपोषण का एक रूप है। यह विटामिन्स और खनिज तत्वों जैसे जिंक, आयोडीन, लोहा एवं प्रोविटामिन ए की उपलब्ध भोजन में कमी पायी जाती है। जबकि अच्छे स्वास्थ्य और विकास के लिए भोजन में इन तत्वों का सतत् रूप से होना अनिवार्य है। सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी के लिए जिम्मेदार कारणों में खराब आहार ग्रहणता जीवन के विभिन्न चरण जैसे गर्भावस्था और स्तनपान के समय इन तत्वों की अधिक आवश्यकता, रोग, संक्रमण या परजीवियों का होना आदि है। कुपोषित बच्चे संक्रामक रोगों के प्रति अधिक सवेंदनशील होते हैं। क्योंकि इनकी प्रतिरक्षा प्रणाली कमजोर होती है। जिससे उनमें मृत्यूदर अधिक पायी जाती है। पोषण की स्थिति और संक्रमण के प्रतिरोध का आपस में एक मजबूत सम्बन्ध होता है।

भारत एकीकृत बाल विकास सेवा और मध्याह्न भोजन योजना जैसे कार्यक्रम प्रतिबद्धताओं के बावजूद कुपोषण से जूझता है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएफएसएच –4) के अनुसार, पांच साल से कम उम्र के बच्चों में बौनापन, अपूर्ण विकास और कम वजन क्रमशः 38. 4, 21 और 35.8 प्रतिशत है। अफ्रीका के बाद भारत बच्चों के मुकाबले सबसे ज्यादा प्रभावित है। यह विश्व स्तर पर 50 प्रतिशत अपूर्ण विकसित बच्चों का भी घर है। ग्लोबल हंगर इंडेक्स 2019 के अनुसार, भारत भूख के गंभीर स्तर से पीड़ित है। कुपोषण स्पष्टरूप से दृष्टिगोचर नहीं होता है, क्योंकि एक बच्चा स्वस्थ दिखाई दे सकता है, भले ही वह सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी के कारण अंदर से पीड़ित हो। यह न केवल ग्रामीण भारत में बच्चों तक सीमित है, बल्कि शहरी बच्चों के बीच भी गहरी जड़ें जमाए हुए है।

भारत सरकार ने राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम, राष्ट्रीय पोषण रणनीति और राष्ट्रीय पोषण मिशन जैसी महत्वाकांक्षी योजनाओं को लागू किया है, जिसका उद्देश्य अभिसरण दृष्टिकोण को बढ़ावा देना है जो भोजन और पोषण की असुरक्षा की बहुआयामी प्रकृति को दर्शाता है, और संबंधित असमानताओं को संबोधित करता है। लिंग, आयु, विकलांगता, आय, जाति और क्षेत्र पोषण और खाद्य सुरक्षा लक्ष्यों पर वितरण में सुधार के लिए देश की सामाजिक सुरक्षा नेट कार्यक्रमों के कई सुधार किए गये। अभी तक कृषि के साथ एक एकीकृत निगरानी प्रणाली अनुपस्थित है। इसलिए, खाद्य प्रणालियों, कृषि और पोषण में अधिक नीतिगत समन्वय जरूरी है। वर्तमान में उपलब्ध जैव संवर्धित फसलों की प्रजातियों, देशी स्थानीय अनूकूल प्रजतियों एवं तकनीकी दखल द्वारा गावों में छिपी अदृश्य भुखमरी दूर करने के लिये इसके व्यापक प्रसार प्रचार की आवश्यकता है।

बायो फोर्टिफाइड विलेज की अवधारणा को मुख्य रूप से कुपोषण से संबंधित चुनौतियों, कठिनाइयों को सतत् एवं स्थायी रूप से उचित सामाधान प्रस्तुत करना है इसमें गांव के स्तर पर कार्य योजना के तहत सभी को विटामिन्स, खनिज तत्व और कैलोरी के स्रोत से भरपूर अनाज, दालों, सब्जियों, फलों, औषधीय और स्वदेशी पौधों को जैविक एवं प्रजनन विधियों द्वारा उन्नत प्रजातियों को उपलब्ध कराना है जिससे टिकाऊपन के साथ ही मूल्य संवर्धन के लिए तकनीकी हस्तक्षेप के साथ पर्यावरण के अनुकूल तरीके के प्रचार प्रसार बढ़ा कर कुपोषण को स्थायी रूप से दूर कराना है।

जैव संवर्धित गांव (बायोफोर्टीफाइड विलेज) क्यो ?

1. स्थायी एवं आर्थिक रूप से व्यवहारिक और उपभोक्तामुखी प्राथमिकता आधारित कृषि स्त्रोतों से पोषक आहार के सभी आवश्यक घटकों को सतत् रूप से गांव में उपलब्धता सुनिश्चित कराने के लिये,
2. खाद्यान्न फसलों की प्रजातियों का पोषण मूल्य बढ़ाने के लिए अनुसंधान एवं विकास को सक्षमता निर्माण कायक्रम द्वारा गावों के गौरव को बढ़ाने के लिए,
3. जैव संवर्धित गांव के प्रत्येक घर के स्वयं के उपयोग के लिए पोषक तत्वों से प्रचुर फसलों के बीजों को उत्पादित करने के साथ ही इसमें अन्य गावों में प्रचारित कर जाग्रत करने के लिये,
4. अन्य गावों के किसान व्यवहारिक रूप से पोषण वाटिका एवं अन्य क्रिया–कलापों का अवलोकन कर अपने गावों में भी इसे अंगीकृत करने के लिए प्रेरित करने के लिये,
5. जैव संवर्धित एवं विविधिता से जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम करने के लिए,
6. कोविड–19 जैसे वैश्विक महामारी एवं अन्य बीमारियों से लड़ने के लिए प्रतिरक्षा के लिए,
7. पर्यावरण में प्रदूषण कम करने के लिए,
8. अपनी अजीविका में बढ़ोत्तरी के लिए अतिरिक्त आय के साधन करने के लिए गांव स्तर पर मूल्य वर्धित तकनीकी एवं भोज्य पदार्थ प्रसंसकरण यूनिट की स्थापना के लिए,
9. निर्यातोंन्मुखी पोषक तत्वों से भरपूर जैविक उत्पादन को प्रोत्साहन करने के लिए एवं,
10. पारम्पिारिक उच्च गुणवत्ता एवं पोषण मूल्य की विभिन्न स्थानीय फसलों, प्रजातियों को पुर्नजीवित कर उनके संबर्धन, प्रसरण एवं संरक्षण के लिए बायोफोर्टीफाइड विलेज **(जैव संवर्धित गांव)** बनाने की अति आवश्यकता है।

बायोफोर्टीफाइड विलेज (जैव संवर्धित गांव) के घटक

1. पारम्पिारिक तकनीकी दक्षता के आंकड़ो का संकलन एवं प्रलेखन
2. गांवों में जैव संवर्धन के लिए क्षमता निर्माण
3. उच्च पोषक मूल्य वाली जैव संवर्धित/पारम्पारिक देशी फसलों की खरीद और आपूर्ति
4. स्थानीय जीन बैक की स्थापना
5. सरकारी योजनाओं और सुविधाओं का एकीकरण एवं सरलीकरण
6. पोषण प्रभाव कारकों का विश्लेषण

कार्य योजना एवं रणनीति

1. जैव संवर्धित गांव विकास की कार्य योजना की प्रथम कढ़ी में कानपुर देहात जिला के तीन विकास खण्डों का चयन जन सांख्यिकीय पैटर्न, भौगोलिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति, प्राकृतिक संसाधनों के साथ ही भूमि की उत्पादकता, बंजर, सूखा आदि के आधार पर करना आवश्यक है। एक विकास खण्ड में 10 गावों को यादृच्छिक रूप से जैव संवर्धित गावं में परिलक्षित करने को प्राथमिकता देना जरूरी है।
2. प्राकृतिक रूप से प्रचुर मात्रा में पोषक तत्वों वाली फसलें जैसे सहजन (मोरिंगा) नीबू, कढ़ी पत्ता, करौंदा, फालसा, पपीता, सांबा, कोदों, कंगनी, रामदाना, चिया, क्यूनोआ विभिन्न स्थानों से एकत्रित करके विश्वविद्यालय प्रक्षेत्रों पर पर्याप्त मात्रा में बीज बनाकर जैव सबर्धित गांव में आपूर्ति कर वोकल फार लोकल अवधारणा को सशक्त करना है।
3. आनुवांशिकी या जैविक विधियों से विकसित पोषक तत्वों की प्रचुर मात्रा वाली विभिन्न फसलों की प्रजातियों को संकलित कर विश्वविद्यालय में फसल कैफेटेरिया बनाने के साथ ही जैव संवर्धित गावों के किसानों को सहज सुलभ कराकर उनके उपभोग के लिए प्रेरित करना कार्य योजना का एक महत्वपूर्ण अंग है।
4. जैव सबंर्धित गांव के परिवारों के घरों के आस पास खाली पड़ी जमीन पर पोषण वाटिका की स्थापना के लिए बीज, रोपण पौध और फलों के पौधों को कृषक परिवारों को उपलब्ध कराने को प्रमुखता दी जा रही है।
5. किसानों की पोषण सुरक्षा के साथ–साथ उसकी आय में वृद्धि हेतु विभिन्न उत्पादों की ग्रेडिंग, विधायनन, भण्डारण एवं बाजार की जानकारी आदि की सुविधाओं का विकास किया जा रहा है। जिससे उसे अपने उत्पाद का अच्छा मूल्य मिल सके।
6. नवीन और कम लागत वाली कृषि तकनीकी का उपयोग, सिंचाई आच्छादन में वृद्धि, मृदा स्वास्थ्य, जल, उर्वरक उपयोग दक्षता में वृद्धि के साथ ही फसल उत्पादन के जैविक आधारों पर योजनाबद्ध तरीके से आगे बढ़ने की रणनीति भी एक महत्वपूर्ण बिन्दु है।
7. जैव सबंर्धित गांव में कृषि प्रसंस्करण इकाइयों और उच्च श्रेणी की आपूर्ति श्रृंखलाओं की स्थापना को प्रोत्साहित करने पर भी बल दिया जा रहा है।
8. संतुलित एवं पौष्टिक आहार को दैनिक जीवन में अपनाने के लिए जागरूक अभियान चलाने पर भी जोर दिया जाना आवश्यक हैं
9. कृषि की वास्तविक स्थिति को समझने के लिए भू–उपयोग एक महत्वपूर्ण सकेंतक है और यह समय के साथ ही कृषि विकास को भी प्रतिबिम्बित करता है। अक्सर उन्नत अर्थव्यवस्था में यह देखा गया है कि विनिर्माण और सेवाओं की तुलना में कृषि उत्पादकता हमेशा से पिछड़ी रही है। जो मुख्य रूप से कृषि से जुड़ी विभिन्न प्राकृतिक बाधाओं की सीमा और परिवर्तनी प्रकृति के कारण है। ग्रामीण क्षेत्रों में भूमि आज भी सबसे मूल्यवान एवं आजीविका सुरक्षा का एक मजबूत स्त्रोत है। जो आर्थिक झटके के विपरीत एक बफर के रूप में कार्य करती है। देश की बढ़ती जनसंख्या से उत्पन्न होने वाले खाद्यान्न की उच्च मांग को पूरा करने के लिए खाद्यान्न में निरन्तर वृद्धि की आवश्यकता के साथ ही पोषक तत्वों से भरपूर प्राकृतिक रूप से उन्नत स्थानीय देशी प्रजातियों के पुनरूद्धार के साथ ही आनुवाशिकी रूप से विकसित प्रजातियों को भी स्थान दिया जा रहा है।

जैव संर्वधन से लाभ–

1. जैव संवर्धन से विकसित प्रजातियाँ हमें चार प्रकार से लाभ पहुँचाती है–
2. **जैव संवर्धन एक टिकाऊ तरीका है।** जिसके द्वारा खाद्यान्नों पर आधारित गरीबों को भी आसानी से पोषक तत्व प्राप्त हो जाते है। जिसमें प्रतिदिन उपयोग की जाने वाले प्रधान खाद्यान्नों से कुपोषण की समस्या से निदान पाया जा सकता है।
3. **जैव संवर्धन लक्ष्य आधारित है।** ग्रामीण क्षेत्र जहाँ अधिकतर जनसंख्या गरीब है। जिनके पास पोषक तत्वों से भरपूर पूरक आहार को बाजार से खरीदने के लि धन नहीं है वहाँ पर जैव संवर्धित प्रजातियों को विभिन्न माध्यमों से उपलब्ध कराकर कुपोषण को आसानी से दूर किया जा सकता है।
4. **जैव संवर्धन मूल्य प्रभावी उपाय है।** संवर्धित पूरक आहार के लिए हमें निरन्तर धन खर्च करना होता है। जबकि जैव संवर्धित प्रजातियों को एक बार विकसित करने में धन खर्च होता है उसके बाद पोषक तत्वों को उसके द्वारा लगातार बिना किसी अतिरिक्त लागत के प्राप्त किया जाता रहता हैं। इन्हें किसान प्रति वर्ष स्वयं एवं अन्य के उपयोग के लिए उगाता रहेगा और सहज ही पोषक तत्वों की उपलब्धता होगी।
5. जैव संवर्धित फसलों से कृषकों की आज अच्छे स्वास्थ्य के साथ ही इन फसलों में बीमारी भी कम लगती है।

जैव संवर्धित गांव अवधारणा से सम्बन्धित प्रकाशित साहित्य एक नजर में

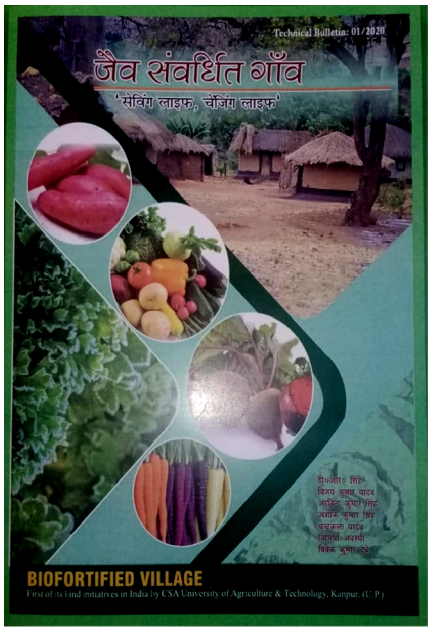

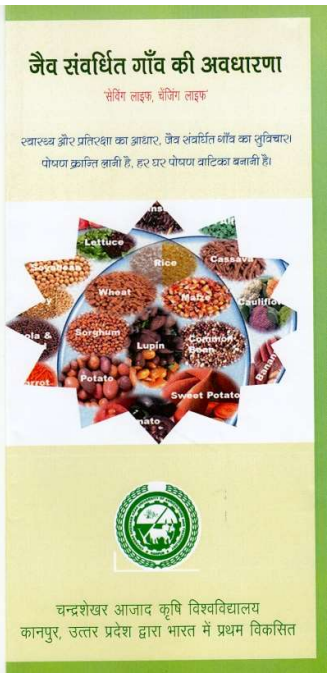

फोटोगैलरी एवं प्रिंट मीडिया में संवर्धित गांव

2020.10.12 15:42

जैव संवर्धित गाँव
'सेविंग लाइफ, चेंजिंग लाइफ'
Bio fortified Village,
First of its kind initiatives in India by C.S. Azad University of Agriculture & Technology, Kanpur (U.P.)
'Saving Life, Changing Life'
उद्घाटन समारोह
Inauguration Ceremony
डा.डी.आर. सिंह, मा.कुलपति, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर
द्वारा
दिनांक : 12 अक्टूबर 2020, समय : 2 बजे अपरान्ह
2020.10.12 14:29

उन्नतिशील बीज किसान की समृद्धि
जैव संवर्धित गाँव
'सेविंग लाइफ, चेंजिंग लाइफ'
दिनांक : 12 अक्टूबर 2020, समय : 2 बजे अपरान्ह
विज्ञापन

कुलपति ने विश्वविद्यालय की तकनीक गांवों तक पहुंचाने का निर्णय किया
19:17
आईएसआई मार्क की वास्तविकता की जांच करें-

अमित पाल- ग्रामीण

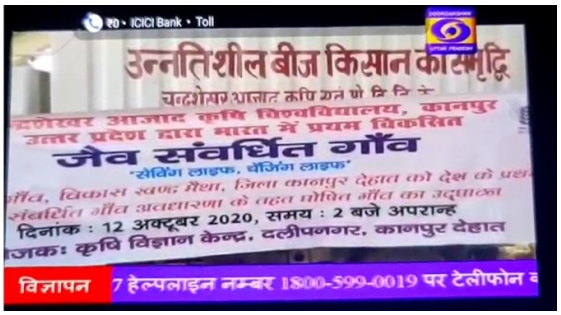

कुलपति ने विश्वविद्यालय की तकनीक गांवों तक पहुंचाने का निर्णय किया

अमर उजाला प्रदेश-आसपास
कानपुर | मंगलवार, 13 अक्तूबर 2020 6

अनूपपुर बना देश का पहला जैव संवर्धित गांव

गीतेश अग्निहोत्री

कानपुर देहात/शिवली। मैथा तहसील क्षेत्र का अनूपपुर गांव देश का पहला जैव संवर्धित गांव बना है, पूरे देश को कुपोषण से लड़ने की राह दिखाएगा। इसकी घोषणा सोमवार को सीएसए कुलपति डॉ. डीआर सिंह ने गांव में कार्यक्रम के दौरान की। अब गांव में पोषक तत्वों से भरपूर फसलें कराई जाएंगी ताकि कुपोषण से मुक्ति पाई जा सके।

चंद्रशेखर आजाद कृषि विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ. डीआर सिंह ने कहा कि अनूपपुर गांव समूचे देश को कुपोषण से लड़ने की राह दिखाएगा। आज के युग में स्वस्थ रहना बड़ी चुनौती है। कुपोषण से गांव के बच्चों का विकास थम गया है। अनूपपुर के ग्रामीण व कृषि वैज्ञानिक मिलकर

जैव संवर्धित गांव अवधारणा पुस्तक का विमोचन करते सीएसए कुलपति।

देश को कुपोषण से लड़ने की राह दिखाएगा अनूपपुर गांव

अनाज, फल व सब्जियों की ऐसी फसल तैयार करेंगे, जिसमे पोषक तत्वों की पर्याप्त मात्रा होगी। इन फसलों से होनी वाली उपज को खाने के बाद गांव के लोग स्वस्थ होंगे और कुपोषण से मुक्ति पाएंगे। इसके अलावा गांव के किसानों की आमदनी चार गुना बढ़ाने का भी प्रयास किया जाएगा।

निदेशक प्रसार डॉ. धूम सिंह ने कहा कि चयन के लिए चार माह से प्रयास चल रहा था।

राष्ट्रीय सहारा
कानपुर • मंगलवार • 13 अक्टूबर • 2020 5

अनूपपुर बनेगा देश का प्रथम जैव संवर्धित गांव

सीएसए कुलपति डॉ. डीआर सिंह ने किया देश के प्रथम जैव संवर्धित गांव योजना का उद्घाटन।

सीएसए कृषि विवि कुलपति ने किया जैव संवर्धित गांव योजना का उद्घाटन

कुपोषण की समस्या को देखते हुए सुधार के लिए किया गया गांव का चयन

कानपुर (एसएनबी)। खाद्य एवं पोषण सुरक्षा व कुपोषण की स्थिति में सुधार के लक्ष्य को लेकर सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि ने कानपुर देहात जिले के विकास खंड मैथा के गांव अनूपपुर का चयन जैव संवर्धित गांव (बॉयोफोर्टिफाइड विलेज) के रूप में विकसित करने के लिए किया है। दावा है कि यह देश का प्रथम जैव संवर्धित गांव होगा।

विवि कुलपति डॉ.डीआर सिंह ने सोमवार को 'सेविंग लाइफ, चेंजिंग लाइफ' के नारे के साथ उक्त जैव संवर्धित गांव योजना का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि आज कानपुर देहात ही नहीं अपितु देश के लिए ऐतिहासिक दिन है कि हमारे विवि ने जैव संवर्धित गांव की अवधारणा के विकास का कार्यान्वियन अनूपपुर गांव से आरंभ करना शुरू किया है। कुलपति ने जैव संवर्धित गांव अवधारणा नामक पुस्तिका का भी विमोचन किया। निदेशक शोध डॉ.एचजी प्रकाश, निदेशक प्रसार डॉ.धूम सिंह, अपर निदेशक प्रसार डॉ.अरविंद कुमार सिंह, डॉ.रामाशीष यादव, डॉ.खलील खान, डॉ.अशोक कुमार, डॉ.राजेश राय, डॉ.अरुण कुमार सिंह, डॉ.विजय कुमार यादव सहित अन्य लोग इस मौके पर उपस्थित रहे।अनूपपुर गांव की कुल जनसंख्या 906 है। एक सर्वेक्षण के अनुसार इस गांव में कुपोषित बच्चों की संख्या 67 है तथा 116 महिलाओं में खून की कमी पाई गई है। कुपोषण को दूर करने के लिए कार्य योजना के तहत सभी को विटामिंस, खनिज तत्व व कैलोरी से भरपूर अनाज, दाल, सब्जियां,फल, औषधि उपलब्ध कराना है। पोषणयुक्त खाद्य के लिए स्वदेशी पौधों को जैविक एवं प्रजनन विधियों द्वारा विकसित उन्नत प्रजातियों को ग्रामीणों को उपलब्ध जायेगा, ताकि कुपोषण को स्थायी रूप से दूर किया जा सके। जैव संवर्धन का तात्पर्य खाद्यान्नों के साथ फल-सब्जियों को स्वास्थ्य के लिए अति आवश्यक तत्वों से आनुवांशिकी एवं ट्रांसजेनिक विधियों द्वारा समृद्ध करना है। जैव संवर्धन का मुख्य लक्ष्य पोषक तत्वों को आम लोगों तक पहुंचाकर उनकी स्वास्थ्य को बेहतर बनाये रखना है। कुपोषण के कारण मृत्यु व रुग्णता दर को कम करने में मदद मिलेगी। प्राकृतिक रूप से पोषक तत्वों वाली फसलों जैसे सहजन (मोरिंगा), नीबू, कढ़ी पत्ता, करौंदा, फालसा, पपीता, सांवा, कोदों, कंगनी, रामदाना , चिया, क्यूनोआ विभिन्न स्थानों से एकत्रित करके विवि प्रक्षेत्रों में पर्याप्त मात्रा में बीज बनाकर जैव संवर्धित गांव में आपूर्ति की जायेगी।

आज
कानपुर, 13 अक्टूबर 2020 4

जैव संवर्धित गांव से कुपोषण दूर करने में मदद

कानपुर, 12 अक्टूबर। खाद्य और पोषण सुरक्षा की स्थिति के मददेनजर आज चंद्रशेखर आजाद कृषि एव प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डा. डी.आर. सिंह ने मैथा में जैव संवर्धित गांव का उदघाटन करते हुए कहाकि आज कानपुर देहात ही नहीं, बल्कि देश के लिए ऐतिहासिक दिन है। जब सीएसए की ओर से देश से अदृश्य भुखमरी, कुपोषण की समस्या को स्थायी एवं कारगर रूप से दूर करने के लिए जैव संवर्धित गांव की अवधारणा का विकास कर अनुपपुर जैव संवर्धित गांव के रूप में क्रियान्वयन किया है। डा. सिंह ने बताया कि राष्टीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएफएसएच-4) के अनुसार पांच साल से कम उम्र के बच्चों में बौनापन, अपूर्ण विकास और कम वजन क्रमश 38.4, 21 और 35.8 प्रतिशत है। अफ्रीका के बाद भारत बच्चों के मुकाबले सबसे ज्यादा प्रभावित है। यह विश्व स्तर का 50 प्रतिशत अपूर्ण विकसति बच्चों का भी घर है। इस गांव में स्तरीय कार्य योजना के तहत सभी को विटामिन्स, खनिज तत्व और कैलोरी से स्रोत से भरपूर अनाज, दालों, सब्जियों, फलों, औषधीय और स्वदेशी पौधों को जैविक एवं प्रजनन विधियों द्वारा उन्नत प्रजातियों को उपलब्ध करानां है। जिससे टिकाऊपन के साथ मूल्य संवर्धन के लिए तकनीकी हस्तक्षेप के साथ पर्यावरण के अनुकूल तरीके प्रचार-प्रसार बढ़ा कर कुपोषण को स्थायी रूप से दूर किया जा सके। कुलपति ने जैव संवर्धित गांव अवधारणा नामक पुस्तिका एवं राष्टीय पोषण माह-2020, पोषण वाटिका के स्वास्थ्यवर्धक लाभ, पोषण क्रान्ति लानी है। हर घर पोषण वाटिका बनानी है। कुपोषण दूर करने की प्रभावी पहल है-जैव संवर्धित गेहूं एवं अदृश्य भुखमरी निदान में पोषक खाद्यान्न पम्पलेट का विमोचन किया। प्रो. विजय कुमार यादव, डा. अरविंद कुमार ने कड़ी मेहनत के साथ समन्वय द्वारा जैव संवर्ग गांव की अवधारणा ही नहीं अपितु इसके क्रियान्वय में अपना विशेष योगदान दिया है। वरिष्ठ वैज्ञानिक डा अशोक कुमार व उनकी टीम ने विभिन्न गांवों के सर्वेक्षण कार्यों को सम्पादित करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस दौरान डा. स्वेता, निदेशक शोध डा. एस.जी. प्रकाश, डा. धूम सिंह, डा. अरुण कुमार सिंह, डा. चंद्रकला, डा. निमिशा अवस्थी आदि मौजूद रहीं।

कार्यक्रम को सम्बोधित कुलपति डा. डी.आर सिंह।

'अनूपपुर' बना जैव संवर्धित गांव, कुपोषण होगा दूर

13/10/2020

जन एक्सप्रेस संवाददाता
प्रदीप शर्मा

कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय ने सेविंग लाइफ चेंजिंग लाइफ के नारे के साथ जैव संवर्धित गांव (बायोफोर्टीफाइड विलेज) के लिए कानपुर देहात का सर्वे किया और कुपोषण से जुड़े अधिकारियों से विचार विमर्श करने के बाद अनूपपुर विकासखंड मैथा जिला कानपुर देहात को देश का पहला जैव संवर्धित गांव बनाया। जिसका उद्घाटन सोमवार को विश्वविद्यालय के कुलपति डॉक्टर डीआर सिंह ने किया। इस अवसर पर कुलपति डॉ.डी.आर. सिंह ने कहा कि आज कानपुर देहात ही नहीं बल्कि देश के लिए ऐतिहासिक दिन है जब विश्वविद्यालय ने देश से अदृश्य भुखमरी और कुपोषण की समस्या को स्थाई और कारगर रूप से दूर करने के लिए जैव संवर्धित गांव की अवधारणा पर अनूपपुर को जैव संवर्धित गांव के रूप में क्रियान्वयन किया है।

उन्होंने कहा कि इस योजना के तहत गांव में सभी को विटामिंस, खनिज लवण और कैलोरी से भरपूर अनाज, दालें, सब्जियां, फल और औषधि उपलब्ध कराने के साथ पर्यावरण के अनुकूल तरीके का प्रचार प्रसार को बढ़ाकर कुपोषण को स्थाई रूप से दूर करना है। इस अवसर पर कुलपति ने जैव संवर्धित गांव अवधारणा नामक पुस्तक का विमोचन भी किया।

इस दौरान निदेशक शोध डॉ. एच.जी.प्रकाश, निदेशक प्रसार डॉ.धूम सिंह, अपर निदेशक प्रसार डॉ. अरविंद कुमार सिंह, डॉ.रामाशीष यादव, डॉ. खलील खान, डॉ.अशोक कुमार, डॉ. राजेश राय, डॉ.अरुण कुमार सिंह, डॉ. विजय कुमार यादव, सहित अन्य लोग मौजूद रहे।